ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

अभिजन वर्ग की अवधारणा एवं समाज का सामाजिक, आर्थिक परिवेश

कमलजीत सिंह, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. नन्द किशोर सोमानी, सह–आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

प्रत्येक समाज में किसी न किसी प्रकार का सामाजिक संस्तरण होना अति आवश्यक है। अतः प्रत्येक समाज में प्रमुखतया दो वर्गो का अस्तित्व अवश्य पाया जाता है। उच्च स्तर वर्ग की अवधारणा और समाज में इसके प्रभाव को स्पष्ट करने की दृष्टि से ही पैरेटो ने इस तत्सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। अभिजन वर्ग संरचना समाज में शक्ति संरचना और निर्णय प्रक्रिया में प्रकट समाज के आधारभूत मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

समाज के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, किसी भी क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त करने वालों को अभिजन भी कहते है। इसी प्रकार मानवीय गतिविधि के, प्रत्येक क्षेत्र में अंक निर्धारित किये जाये और जिन लोगों को किसी विशिष्ट मानवीय गतिविधि के क्षेत्र में सर्वोच्च अंक मिले और उनका एक वर्ग बनाया जाये, तो उस वर्ग को अभिजन कहेंगे।

इस प्रकार, पैरेटो ने अभिजन शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिये किया है, जो बुद्धि, चरित्र, कुशलता तथा क्षमता के क्षेत्र में उच्च स्थान रखते है। पैरेटो के समान श्रीमोस्का ने ''अभिजन–वर्ग को एक संगठित अल्प–वर्ग कहा है।

उच्च स्तर उन लोगों का समूह है जिन्हें की सभी लोग रखने की इच्छा रखते है, जैसे धन, शक्ति तथा प्रतिष्ठा सबसे अधिक है, सामन्य लोग की स्थिति से, उनकी स्थिति अच्छी होती है तथा जो बड़े निर्णयों को लेने की स्थिति में होते हैं।

अतः अभिजन में समाज का निर्णय लेने की सामर्थ्य होती है। अभिजन समुदाय में, उच्चस्तर के लोग होते है। ये उच्चस्तर के लोग एक दूसरे को जानते है तथा निर्णय लेने में एक दुसरे के विचारों का ध्यान भी रखते है।

वास्तविकता यह है कि, उच्चस्तर के लोग किसी न किसी रूप में समाज में उच्च स्थान रखते है। कोलाबिंस्का ने इसी अर्थ में अभिजन का प्रयोग किया है–''अभिजन शब्द से श्रेष्ठता की मूल ध्वनि निकलती है।

अभिजन शब्द का प्रयोग वास्तव में अब प्रकार्यात्मक तथा मुख्य रूप से व्यवसायिक समूह के लिये किया जाता है, जो कि, समाज में (कुछ कारणों से) एक उच्च प्रस्थिति प्राप्त करते है। लासवेल ने भी अभिजन की परिभाषा उच्च स्थिति के रूप में की है, ''अभिजन की अवधारणा वर्गात्मक तथा वर्णनात्मक प्रकार की है, जो समाज में उच्च पद प्राप्त लोगों के प्रति संकेत करती है।

अभिजन–वर्ग उस सामाजिक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है, जो कम या अधिक इज्जत, स्थिति और कुछ उदाहरणों द्वारा जनसंख्या का विशाल भाग पर प्रभाव का अनुभव करता है।

जनतंत्र शासन व्यवस्था समानता के आधारभतू सिद्धान्त पर आधारित होती है परन्तु लोकतन्त्र में भी व्यवहारिक रूप से समानता के सिद्धान्त का पूर्णरूपेण पालन नहीं हो पाता है। विभिन्न कारण जैसे–सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, वशांनुगत आधार, धर्म–जाति भेद, ज्ञान, शिक्षा तथा कार्य करने की कुशलता आदि लोकतन्त्र में राजनीतिक समानता के सिद्धान्त को अर्थहीन बना देते है और इन्हीं असमानताओं के परिणामस्वरूप कुछ ''विशिष्टजन'' शासन में पहुँचकर शासन व्यवस्था का सचांलन करते है इन्ही विशिष्ट लोगों को ''अभिजन'', ''श्रेष्ठजन'' अथवा 'इलीट' के नाम से जाना जाता है। ''इलीट'' शब्द लैटिन भाषा के ''इलीगेरी'' शब्द से बना है, जिसका अर्थ हातेा है ''चुनना''। ''ऑक्सफोर्ड'' अंग्रेजी शब्द कोष के अनुसार ''इलीट'' शब्द का प्रयागे सन् 1823 में हुआ। फ्रॉन्सीसी भाषा में इलीट शब्द का प्रादुर्भाव 14वीं सदी के लगभग हुआ था, जिसका अर्थ था ''च्वॉयस''। 16वीं सदी में ''इलीट'' शब्द का यही अर्थ लगाया जाता था।

प्रस्तावित शोध के सोपान

आधुनिक समाजशास्त्र के अन्तर्गत ''अभिजन'' सम्बन्धी विभिन्न उपधारणाओं के बीच एक पक्ष को लेकर समानता है– सभी अभिजनवादी लेखक एवं विचारक यह मानते है कि, अभिजन उन अल्पसंख्यक लोगों के लघु समूह को कहते है, जो सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। विभिन्न अभिजनवादी विचारकों एवं लेखकों ने ''अभिजन संकल्पना'' एवं ''अभिजन'' शब्द तथा

वर्ग के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया है एवं उनकी परिभाषाएं भी दी है, उन्हीं के आधार पर ''अभिजन अवधारणा'' का सम्यक् विश्लेषण यहाँ पर किया जा रहा है।

यदि व्यक्तियों का वर्गीकरण उनके राजनीतिक तथा सामाजिक प्रभाव अथवा सत्ता के आधार पर किया जाए तो, अधिकाशं समाजों में यह स्थिति सामने आयेगी कि, जिन व्यक्तियों का सम्पत्ति वितरण सम्बन्धी अनुक्रम में जो स्थान था, वही स्थान उन्हें इस अनुक्रम में भी मिलेगा। तथाकथित उच्च वर्ग आमतौर से सबसे अधिक सम्पन्न भी होता हैं। यह वर्ग ''अभिजन'' या कुलीन वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करता है।

शासकीय अभिजन, इस वर्ग में अभिजन वर्ग की श्रेणी के वे व्यक्ति आते है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों ''सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि में सफल रहे है, जो संख्या में अल्प होते है तथा सामाजिक–राजनीतिक कार्यों का सम्पादन करते है। उदाहरण के लिए इस श्रेणी में, सफल व्यापारी, सफल कलाकार, सफल राजनीतिज्ञ, सफल प्रोफेसर आदि है''।

जिसमें समाज के शेष लोग शामिल होते है। गैर शासकीय अभिजन के अन्तर्गत वे व्यक्ति सम्मिलित किये जाते है, जो खेलकूद, व्यापारिक सगंठनों, धार्मिक सगंठनों अन्य मानवीय क्रियाओं में सर्वोच्च स्थान रखते है।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

समाज में नवीन हितों अथवा सामाजिक शक्ति के उदय होने पर, अभिजन के प्रभुत्व में परिवर्तन होता है। मोस्का के अनुसार, जब कभी समाज में नवीन आर्थिक हित उभरता है अथवा नवीन ज्ञान अविष्कृत होता है अथवा समाज में कोई नवीन विचारधारा फैल जाती है, तब अभिजनों का प्रभुत्व स्थापित हो जाता है। इस प्रकार कोई सम्भ्रान्त संगठन, उस समाज की सामाजिक शक्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। कोई भी शासक वर्ग, समाज एवं अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों की अनदेखी कर अधिक दिनों तक अपना प्रभुत्व कायम नहीं रख सकता है। अतः अभिजनों की उत्तरजीविता समाज के लिए विभिन्न हितों के अनुरूप नीतियों के समन्वित करने की क्षमता पर निर्भर है।

मिचेल्स की मुख्य मान्यता है कि, संगठित समाज की संरचना, अभिजन के उदय का स्रोत है। अभिजन की शक्ति संगठन पर निर्भर करती है। मिचेल्स के शब्दों में, जो संगठन की बात करता है, वह अल्पतन्त्र की वकालत करता है। मिचेल्स ने समस्त सामाजिक संगठनों के शासन के लिए एक नियम जिसे अल्पतन्त्र का लौह नियम कहते है, का उल्लेख किया है।

संगठन की प्रकृति ही नेतृत्व को शक्ति और लाभकारी स्थिति प्रदान करती है। संगठनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से, नेतृत्व अपनी स्थिति मजबूत बना लेता है। आधुनिक वृहत् संगठन के संचालन के लिए सुविज्ञता की आवश्यकता है, जिसे प्राप्त करने के लिए लोगों को अवकाश नहीं होता है।

जनसमूह द्वारा संगठन का नियंत्रण, उसकी कुशलता से मेल नहीं खाता। अतः नीति निर्माण एवं तकनीकी प्रशासन, इन दोनों क्षेत्रों में, पेशेवर निर्देशन एवं नियंत्रण की आवश्यकता होती है। नेतृत्व की इस तकनीकी अपरिहार्यता के कारण ही दलीय नियंत्रण उसके प्रभावी राजनीतिज्ञों एवं उसके अधिकारी तन्त्र के हाथों में हो जाता है।

वर्तमान में उत्पादक शक्ति, प्रबन्धक समाज की स्थिति के हाथों में हो गयी है। इस प्रबन्धक समाज की स्थिति, उनकी तकनीकी योग्यता पर निर्भर करती है, न कि पूँजीपति के वित्तदाता होने के कारण, बर्नह्म के मत से, पूँजीवादी, शासक वर्ग के विनाश के उपरांत वर्गहीन समाज की स्थापना नहीं होगी, अपितु उसका विस्थापन, तकनीकी दृष्टि से अपरिहार्य प्रबन्धक समाज द्वारा होगा। सरकार का कार्य, उत्तरोत्तर व्यस्थापित की अपेक्षा कार्यपालिका की जिम्मेदारी होगी, जिसका संचालन अधिकाधिक अधिकारी तन्त्र द्वारा होगा। इस प्रबन्धक वर्ग द्वारा राज्य नियत्रंण तथा राज्य अर्थव्यवस्था के नियंत्रण के परिणामस्वरूप एक नवीन संभ्रान्त प्रभुत्व का विकास होगा।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के जाति संरचना का अध्ययन करना।
2. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के सहभागिता पर, सम्प्रदाय के प्रभाव का अध्ययन।
3. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग की पारिवारिक संरचना का, उनकी राजनीतिक सहभागिता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के परिवार में शिक्षितों की संख्या तथा राजनीतिक सहभागिता के सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. राजनीतिक उच्चस्तर वर्ग के परिवार के सदस्यों के शिक्षा का स्तर तथा राजनीतिक सहभागिता के सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

प्रत्येक समाज चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, उनमें विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ, समूह और व्यक्ति पाये जाते है। इनको विभिन्न समूह, सस्थाओं और व्यक्तियों के कुछ निश्चित पदों का निर्वाह करना पड़ता है। इन पदों का निर्धारण तभी सम्भव हो सकता है जबकि इनके कार्यो मे सन्तुलन बना रहे। इस प्रकार कार्य व्यक्ति के पदों का निर्धारण करते हैं।

मानवीय सम्बन्धों के इतिहास में 'नेतृत्व' पहले कभी उतना महत्वपूर्ण नही था, जितना आज है। आज किसी देश की सामाजिक व्यवस्था के परिवर्तन एवं रूपान्तरण में नेतृत्व की भूमिका विशेष रूप से परिलक्षित होती है। नेता विशेषकर अभिजन, चाहे वे ग्रामीण, नगरीय अथवा किसी भी समाज के हो उनको समाज में एक विशेष दर्जा प्राप्त होता है। ये अभिजन जनता की आकांक्षाओं और भावनाओं के प्रतिनिधि तथा नागरिक स्वतंत्रता के संरक्षक होते है। इन्हें सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन का शिल्पकार माना जाता है। इनकी एक पृष्ठभूमि होती है, इस कारण जन साधारण के लिए इनका विशेष महत्व होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आर0पी0 ठाकुर : 1981"इलीट थ्योरी एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम" स्टरिलिंग पब्लिशर्स, नईदिल्ली, पृ0 36
- इकबाल नारायन तथा अन्य : 1976 ''द रूरल इलीट इन एन इण्डियनस्टेट, मनोहर बुक सर्विस, दिल्ली, पेज16–17
- इबिलाइन सल्लेराट : 1971 वीमेन सासेाइटी एण्ड चेन्ज (आंग्ल भाषा में अनुवाद) के मागरिट स्कॉटफोड, पृष्ठ–75।
- ई0वी0 हैबेल द्वारा उद्धृत : 1965 पंचायत राज (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली), पृ0 59.
- ई0वी0 हैबेल द्वारा उद्धृत : 1965 पंचायतराज (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली), पृ0–63. ऋग्वेद : 1/114/1 तथा 5/54/8 (मण्डलसूक्त मंत्र) भाष्यकार वेंकटमाधव निश्वेश्वरानन्द, वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1964, पृ0–11.